मधुबन ओम् शान्ति अंक 312 जुलाई 2018

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(12-06-18)

प्राणप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा हर सेकेण्ड नवीनता का अनुभव करने वाले, श्रेष्ठ योगी, रुहानियत से सम्पन्न, महातपस्वी बन चारों ओर साक्षात्कार की लहर फैलाने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - शान्तिवन के विशाल डायमण्ड हाल में 20 वर्षों से पुराने युगलों के लिए तपस्या अनुभूति के साथ सम्मान समारोह का कार्यक्रम बड़े उमंग-उत्साह से सम्पन्न हुआ। चारों ओर रुहानी नशे और खुशी का वातावरण है। सबके दिल से यही निकल रहा है वाह बाबा वाह! वाह आपके पवित्र युगलमूर्त राजऋषि बच्चे वाह! जिन्होंने अपने घर को आश्रम बनाया है, जो संगमयुग की हर घड़ी को सफल करते हुए, असम्भव को भी सम्भव कर सबके आगे उदाहरण रूप बने हैं।

देखो, कलियुग में जबकि सारी दुनिया मायावी प्यार के वश है, ऐसे समय में हम सबको प्रभु प्यार, नि:स्वार्थ सच्चा प्यार मिल रहा है। इसी प्यार से हम सब मायाजीत, जगतजीत बन रहे हैं। बाबा ने हमारी वृत्तियों को भी त्याग वाला बना दिया है, इसलिए कहाँ भी आँख नहीं डूबती। बाबा ऐसी शिक्षा, सावधानी और समझानी देता है जो न कभी किसी को दु:ख देते हैं, न दु:ख लेते हैं। बाबा अपनी रुहानी दृष्टि से हर एक में शान्ति, प्रेम और रुहानी शक्ति भर रहे हैं। इसी रुहानी दृष्टि, वृत्ति और स्मृति से हम सदा मुस्कराते हैं। मुस्कराने से कैसी भी मुश्किलातें आपेही ठीक हो जाती हैं।

बाबा को हम बच्चों का कितना फिकर है! ज्ञान, योग, धारणा, सेवा... सबमें बाबा अटेन्शन खिंचवाता है। तो सभी इन चारों ही सबजेक्ट को अच्छी तरह देखो और चेक करो कि हर सबजेक्ट में फुल मार्क्स हैं? जैसे ज्ञानी तू आत्मा बाबा को प्रिय लगते हैं, ज्ञान है तो योग नेचुरल हो जाता है। ज्ञान योग है तो धारणायें भी सहज हो जाती हैं फिर सेवा बाबा आपेही करा लेता है। करावनहार बाबा सब कुछ करते कराते कितना बेफिकर है। हम बच्चों को भी कहते बच्चे तुम्हारी लाइफ भी बेफिकर बादशाह वाली हो।

बाकी तो इस बार दो महीना मधुबन से बाहर रही। कहाँ-कहाँ इधर-उधर जाना हुआ। लण्डन के भिन्न-भिन्न स्थानों पर बाबा के सभी बच्चों से मिलना हुआ फिर रशिया होते, भारत में आई तो बिहार के मुजफ्फरपुर में भी बड़ी अच्छी रौनक देखी। बेहद परिवार से मिलन मनाते मधुबन में आराम से पहुंच गई। अभी बाबा कहता बच्ची जो हुआ उसे भूल जाओ। बाकी जो किया वह अच्छा है। बाबा ने कराया, नाम हमारा काम बाबा का। बाबा अपना काम निमित्त हमारे नाम से कराते हर एक में ट्रस्टी और विदेही रहने की आदत डाल देते हैं। यहाँ आते ही इतने सब युगलों का संगठन देख बहुत-बहुत खुशी हुई। कैसे यह सभी प्रवृत्ति में रहते पवित्र और योगी जीवन जी रहे हैं, यह सब हमारे मीठे बाबा की कमाल है।

देखो, यह पांचों अंगुलियां बराबर नहीं हैं, पर पांचों अंगुलियों से सेवा लेना, यह भी विशेषता है। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी, हिम्मते बच्चे मददे बाप, नियत साफ मुराद हांसिल...इन दो आंखों के बीच में चमकता है अजब सितारा.. यह स्मृति निराकारी, निरंहकारी बना देती है। फिर निरसंकल्प रहने से करावनहार बाबा बहुत अच्छे से अच्छा सब कुछ करा लेता है। अच्छा - सभी को याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"छोड़ो तो छूटो"

1) माया के विघ्न वा पढ़ाई में पेपर तो समय प्रति समय भिन्न-भिन्न रूपों से आने ही हैं लेकिन पास होने के लिए - मैं पढ़ूं तो पास हूँ या टीचर पेपर हल्का करे तो पास हूँ, क्या कहेंगे? मैं पढ़ूं तो पास हूँ! फलाना व्यक्ति पास करे, फलानी परिस्थिति पास करे - यह नहीं। मुझे पास करना है। इसको कहा जाता है - छोड़ो तो छूटो।

2) माया का मेरा-मेरा बहुत लम्बा चौड़ा है, लेकिन मेरा बाप तो एक ही है। एक के आगे माया के हजार रूप भी समाप्त हो जाते हैं इसलिए माया को तलाक देना, यह एक सेकण्ड का सौदा है। सिर्फ एक ''मेरा बाबा'' शब्द याद रखो और उसमें मगन रहो तो सब बातों से छूट जायेंगे। बापदादा एक ही पाठ बच्चों को बार-बार पढ़ाते हैं - ''छोड़ो तो छूटो''।

3) अपने आपसे पूछो कि मुझे यह पाठ ''छोड़ो तो छूटो'' का सदा याद रहता है? या दूसरा छोड़े तो मैं छूटूं? या बाप छुड़ाये तो मैं छूटूं? ऐसा पाठ तो नहीं पढ़ लिया है! किसी भी प्रकार की ड़ाली को अपने बुद्धि रुपी पांव से पकड़कर नहीं बैठना।

4) कोई-कोई बच्चे अपने किसी पुराने स्वभाव-संस्कार वा किसी भी शक्ति की कमी होने कारण, निर्बल होने कारण डाली को पकड़कर बैठ जाते हैं। फिर कहते हैं कोई छुड़ाये तो छूटूं। लेकिन जैसे ब्रह्मा बाप ''छोड़ो तो छूटो'' के इस एक पाठ से ही नम्बरवन बन गये। कभी यह नहीं सोचा कि साथी मुझे छोड़ें तो छूटूं, सम्बन्धी छोड़ें तो छूटूं। विघ्न डालने वाले विघ्न डालने से छोड़ें तो छूटूं, भिन्न-भिन्न परिस्थितियां मुझे छोड़ें तो छुटूं। लेकिन ''छोड़ो तो छूटो'' यह पाठ प्रैक्टिकल में करके दिखाया। तो फालो फादर करो।

5) स्वभाव परिवर्तन में, संस्कार परिवर्तन में, एक दो के सम्पर्क में आने में परिस्थितियों या विघ्नों को पार करने में, ''स्वयं छोड़ो तो छूटो''। परिस्थिति आपको नहीं छोड़ेगी, आप छोड़ेंगे तो छूटेंगे। दूसरी आत्मायें संस्कार के टकराव में भी आती हैं, तो भी यही सोचो कि मैं छोड़ूं तो छूटूं, यह टकराव छोड़ें तो छूटूं, यह नहीं। अगर एक टकराव समाप्त भी होगा तो दूसरा शुरू हो जायेगा, कहाँ तक इन्तजार करते रहेंगे कि यह छोड़े तो छूटूं!

6) अब इन्तजार नहीं, इन्तजाम करो। नहीं तो पंछी भी हो, पंख भी हैं और सुन्दर भी बहुत हो, बाप के वृक्ष पर भी बैठ गये हो अर्थात् ब्राह्मण परिवार के भी बन गये हो लेकिन किसी भी प्रकार के स्व के या दूसरों के स्वभाव संस्कार देखने और वर्णन करने की अगर कमजोरी है, पुरुषार्थ में निराधार नहीं हो, किसी भी व्यक्ति या वस्तु का लगाव है, किसी भी गुण वा शक्ति की कमी है, तो यही भिन्न-भिन्न डालियां हैं, इन्हें छोड़ो तो छूटो। अगर किसी एक भी डाली को पकड़ा हुआ है तो बाप की अगुंली पर सदा नाचने, सदा श्रीमत की अंगुली के आधार पर चलने का अनुभव नहीं कर सकेंगे।

7) 'कर्मभोग है', 'कर्मबन्धन है','संस्कारों का बन्धन है', 'संगठन का बन्धन है' – इस व्यर्थ संकल्प रूपी जाल को अपने आप ही इमर्ज करते हो और अपने ही जाल में स्वयं फँस जाते हो, फिर कहते हो कि अभी छुड़ाओ। बाप कहते हैं कि तुम हो ही छूटे हुए। छोड़ो तो छूटो।

8) आप तो मरजीवा बन गये अर्थात् पहले ही शरीर छोड़ चुके हो, यह तो सिर्फ विश्व की सेवा के लिए शरीर रहा हुआ है, पुराने शरीरों में बाप शक्ति भर कर चला रहे हैं, जिम्मेवारी बाप की है, फिर आप क्यों ले लेते हो। ज़िम्मेवारी सम्भाल भी नहीं सकते हो लेकिन छोड़ते भी नहीं हो। ज़िम्मेवारी छोड़ दो अर्थात् मेरा-पन छोड़ दो तो निर्बन्धन बन उड़ते रहेंगे।

9) अभी तक जो यह कहते हो कि मेरा पुरूषार्थ, मेरी इन्वेन्शन, मेरी सर्विस, मेरी टचिंग, मेरे गुण बहुत अच्छे हैं, मेरी हैन्डलिंग-पॉवर बहुत अच्छी है, मेरी निर्णय शक्ति बहुत अच्छी है। मेरी समझ ही यथार्थ है, बाकी सब मिसअन्डरस्टैन्डिग में हैं। यह मेरा-मेरा ही रॉयल माया है, इससे मायाजीत बन जाओ तो सेकेण्ड में प्रकृतिजीत बन जायेंगे। फिर एक सेकण्ड का डायरेक्शन ''अशरीरी भव'' का सहज और स्वत: हो जायेगा।

10) कई बच्चे तेरे को मेरा बनाने में बड़े होशियार हैं, जैसे जादू मन्त्र से जो कोई कार्य करते हैं तो पता नहीं पड़ता कि हम क्या कर रहे हैं। यह रॉयल माया भी जादू-मन्त्र कर देती है जो पता ही नहीं पड़ता कि हम क्या कह रहे हैं। अब कर्मबन्धनी से कर्मयोगी बनो। अनेक बन्धनों से मुक्त एक बाप के सम्बन्ध में आ जाओ तो सदा एवर-रेडी रहेंगे। संकल्प किया और अशरीरी बने, यह प्रैक्टिस करो।

11) सेवाओं में कितना भी बिज़ी हो, कार्य की चारों ओर खींचातान हो, बुद्धि सेवा के कार्य में अति बिज़ी हो – ऐसे

टाइम पर अशरीरी बनने का अभ्यास करके देखो। यथार्थ सेवा का कभी बन्धन नहीं होता क्योंकि योगयुक्त, युक्तियुक्त सेवाधारी सदा सेवा करते भी उपराम रहते हैं।

12) सेवा में रहते सदा याद रखो कि यह सेवा मेरी नहीं, बाप ने दी है तो निर्बन्धन रहेंगे। 'ट्रस्टी हूँ, बन्धन मुक्त हूँ' ऐसी प्रैक्टिस करो। अति के समय अन्त की स्टेज, कर्मातीत अवस्था का अभ्यास करो तब कहेंगे तेरे को मेरे में नहीं लाया। अमानत में ख्यानत नहीं की। जैसे बीच-बीच में संकल्पों की ट्रैफिक का कन्ट्रोल करते हो वैसे अति के समय अन्त की स्टेज का अनुभव करो तब अन्त के समय पास विद आनर बन सकेंगे।

13) कई बच्चे सहयोगी बनते-बनते वियोगी बन जाते हैं। कारण! किसी न किसी डाली को पकड़ लेते हैं। कभी स्वयं से थक जाते, कभी दूसरों से थक जाते, कभी सेवा से थक जाते हैं, तो डाली को पकड़कर फिर चिल्लाते हैं ''अब छुड़ाओ, छुड़ाओ।'' पकड़ा खुद और छुड़ावे बाप। लेकिन बाप तो सदा छोड़ने की युक्ति बताते हैं। छोड़ेंगे तो खुद ना! करेंगे तो पायेंगे।

14) अब ब्रह्मा बाप की अमूल्य पालना का रिटर्न दो। वह रिटर्न है अमूल्य बनना और बनाना। विशेष पालना का रिटर्न, जीवन के हर कदम में विशेषता भरी हुई हो। यह पालना मिलना भी बहुत श्रेष्ठ भाग्य है। इस भाग्य के स्मृति स्वरूप सो समर्थ स्वरूप बनो। विस्मृति और स्मृति की सीढ़ी पर उतरना चढ़ना नहीं। सदा स्मृति स्वरूप द्वारा उड़ती कला में जाना।

15) सदा हर कदम में सहज और श्रेष्ठ प्राप्ति का आधार ब्रह्मा बाप की यही एक बात तावीज़ के रूप में याद रखना कि ''छोड़ो तो छूटो''। चाहे अपने तन की स्मृति को भुलाए देही-अभिमानी बनने में, चाहे सम्बन्ध के लगाव से नष्टोमोहा बनने में, चाहे अलौकिक सेवा की सफलता के क्षेत्र में, चाहे स्वभाव संस्कारों के सम्पर्क में – सभी बातों में छोड़ो तो छूटो।

16) यह मेरे-पन के हाथ इन डालियों को पकड़ डालियों के पंछी बना देते हैं, इस मेरेपन के हाथों को छोड़ो तो उड़ता पंछी बन जायेंगे। किसी भी प्रकार का बोझ अगर मन में, बुद्धि में है तो बाप को दे दो। जब लेने वाला ले रहा है, तो बोझ देने में सोचते क्यों हो! क्या आदत से मजबूर हो। मजबूर नहीं मजबूत बनो। छोड़ो तो छूटो। छोड़ते नहीं हो तो छूटते नहीं हो। छोड़ने का साधन है - दृढ़ संकल्प। उस किये हुए दृढ़ संकल्प को बार-बार मन में रिवाइज़ करो और रियलाइज़ करो, तो डबल लाइट बन सदा उड़ती कला में उड़ते रहेंगे।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 28-09-14 *मधुबन*

"भावना और भासना अच्छी हो तो समय भी सफल हो जायेगा"

(दादी जानकी)

एक दो को रिगार्ड देने का रिकॉर्ड कभी भी खराब नहीं करना है क्योंकि अन्दर भावना है भासना देने की, तो भावना और भासना। मेरी भावना है कि आप लोगों को भासना आवे इसलिए आ करके यहाँ बैठ गये भासना लेने के लिये। भावना और भासना हो तब तो समय भी सफल हो जायेगा क्योंकि समर्पण हो गये, अभी सफल कैसे हो, उसके लिये चाहिए भावना और भासना। तो यह जो बाबा ने सबको एक समान बनाया है। मैं ड्रामा को देख रही हूँ जैसेकि स्वप्न हो गया, ड्रामा है या ड्रीम है! बस, बाबा और ड्रामा। चक्र का ज्ञान, घर की याद दिलाता है तो अभी जाना है घर में, उसके लिये अव्यक्त बनना है। साकार सृष्टि में होते हुए हम सबको मिलके जाना है क्योंकि हम सबका घर एक है। और फिर सतयुग में आना है उसके लिये संस्कार ऐसे बनाने हैं। 108 में आयेंगे या 8 में आयेंगे, पूछो अपने आपसे?

बाबा कहता है विचार सागर मंथन करना यह किसका काम है? गुल्जार दादी तो बापदादा का रथ है ना इसलिए सदा ही शान्त मूर्ति है और मैं बोलने बिगर नहीं रह सकती हूँ इसलिए तो मुझे जयंती बहन विदेश सेवा के लिये लेके गई थी। मुझे कहा वहाँ आपको कुछ नहीं करना है सिर्फ मेरे साथ शान्त में बैठ जाना है। मतलब अच्छी काम की बात भले बोलो, पर वो भी कम, वो बोल बोलो जो हमारे काम का हो। बाकी इसको ऐसा नहीं करना चाहिए, इस प्रकार का चिंतन नहीं करना है। कभी किसी के लिये यह अच्छी नहीं है, यह नहीं बोलना, ऐसा नहीं बोलना, कहाँ भी हो, अच्छे हैं, हरेक अच्छा है। क्यों अच्छा है? प्रभु का प्यारा है इसलिए अच्छा है। ओके.।

दूसरा क्लास

"अपनी निश्चिन्त स्थिति बनानी है तो निश्चयबुद्धि बन हर एक के पार्ट को साक्षी होकर देखो"

बाबा की हमारे लिये जो उम्मीदें हैं वो सब पूरी कर रहे हैं, ऐसा मैं समझती हूँ। जो समझते हैं अब वो घड़ी आ गई है, वो हाथ उठाओ। कैसी भी स्थिति हो बाबा के सामने बैठे हैं तो शान्त हैं। मीठे बाबा के बोल हैं कि सदा ही समझो मैं महारथी हूँ। महारथी अशरीरी स्थिति में रहता है। यह महारथी का काम है, घोड़ेसवार का नहीं। प्यादा तो बिचारा है, उसको कोई पोजीशन चाहिए। वह सोचेगा कि ऐसे ही थोड़ेही चलना है, कुछ तो पद पोजीशन होनी चाहिए।

करनकरावनहार बाबा करा रहा है, हम कर रहे हैं, यह फीलिंग निमित्त भाव पैदा करती है। फिर जो शक्तियाँ हैं वो काम करती हैं, सर्वशक्तिवान कराता है। करावनहार सर्वशक्तिवान है, आठ शक्तियाँ काम कर रही हैं, मैं कौन हूँ? देह, सम्बन्ध से न्यारी प्रभु की प्यारी।

शरीर कैसा भी है, आप समझ सकते हो पर शरीर से आत्मा और बाबा करावनहार करा रहा है। सारी विश्व बाबा ने अपने हाथों में ले लिया है, साक्षी हो करके देख रहे हैं। सभी हमारे बहन भाई इस फीलिंग में हैं, इस स्थिति में हैं कि करावनहार करा रहा है, हम साक्षी हो करके देखते हैं, क्योंकि ड्रामा एक्यूरेट चल रहा है। मैं हूँ आत्मा, मेरा है परमात्मा और ड्रामा में हरेक का पार्ट न्यारा है, साक्षी हो करके देखो तो बहुत मजा आता है। जो साक्षी हो करके देख रहे हैं वह साक्षी होकर हाथ उठाओ। दो एक जैसे नहीं हो सकते हैं, हरेक न्यारे हैं, हरेक का पार्ट विशेष है। दृष्टि, वृत्ति और अन्दर की स्थिति हमारी कैसी हो, वो समझ गये होंगे।

बाबा ने अव्यक्त पार्ट के लिए गुल्जार दादी को निमित्त बनाया। कितना वन्डरफुल, अव्यक्त बाबा की कमाल है जो सारे विश्व को अंगुली पर नचा रहा है। आप सबको देख दिल कहती है शुक्रिया बाबा आपका। जो कहाँ-कहाँ से चुन करके गले की माला बनाया है, गोद बिठाया है, गले लगाया है, अभी पलकों पर बिठाके लेके जा रहा है, ऐसी फीलिंग है ना, जिसको यह फीलिंग है हाथ उठाओ। इसमें शक्य की बात नहीं, सारी कमाल है निश्चय की इसलिए निश्चिंत हैं। ऐसा कोई यहाँ बैठा है जिसको कोई फिकर हो? कोई स्थान का, कोई स्टूडेन्ट का, कोई एरिया का, कोई रीज़न का...? स्वधर्म हमारा शान्त है। बाबा मेरा सर्वशक्तिवान है, हम सब कौन हैं? मैं जब साक्षी हो करके देखती हूँ...तो कितना वन्डर लगता है, बाबा ने कैसे इतने सब बच्चों को चुना है। फिर कितना न्यारे-प्यारे बनने की बाबा ने शक्ति दी है। दुनिया देख रही है, यह कौन है? मैं समझती हूँ अभी दुनिया में आप कहीं पर भी हैं, यहाँ तो सब एक बाबा के घर बैठे हैं। क्या प्रभु लीला है, अच्छा है। भारत में गाते हैं प्रभु तेरी लीला अपरमअपार है। भगवान ने हमें बहुत भाग्यवान बनाया है। अभी जितना चाहो अपना भाग्य बनाओ, सेवा है याद में रहना। अगर याद में नहीं रहेंगे तो सेवा क्या करेंगे! तो दिल से है - याद, दृष्टि से है - सेवा, अन्दर की है - स्थिति। जब हम एक दो को इस नज़र से देखते हैं, तो कितना अच्छा लगता है, खींच होती है। अच्छा।

तीसरा क्लास

"आज्ञाकारी, वफादार के साथ-साथ कारोबार में ईमानदारी जरूर चाहिए"

ओम् शान्ति का यह महान मन्त्र है। मन्त्र क्यों कहा जाता है? मन में बुद्धि में आत्मा का ज्ञान ऐसा सहज है मैं कौन? मेरा कौन? मुझे क्या करने का है?

अभी सब याद में बैठे थे या शान्त में बैठे थे, जब शान्ति में बैठे हैं तो क्या करते हैं? कर्मेन्द्रियाँ शान्त हैं। बहुत समय के बाद आज इशारा मिला क्लास में आना है। चलते फिरते सब मिले नहीं है, तो यहाँ मिलने के लिये खैंच हो गई क्योंकि दिल में दिलाराम है, दिल दर्पण है, हरेक देखें मैं कौन हूँ? मेरा कौन है? मेरा पार्ट क्या है? मुखड़ा देख ले प्राणी... वृत्ति में हम सब आत्मायें हैं, बाबा के बच्चे हैं, दृष्टि में हरेक को देखते है कि यह किसके हैं! हरेक का पार्ट अपना है, हर साकार मुरली में बाबा की आज्ञा मिली हुई है मनमनाभव, तो इसमें सब आज्ञाकारी हैं ना! एक बाबा के सिवाए कोई नहीं, ऐसे वफादार और कारोबार में लेन-देन में ईमानदार हैं। एकनामी और एकॉनामी से रहना है। फिर एकान्त में और एकाग्रता में रहना फिर है एकता में रहना, एकाग्र चित्त होके रहना। एक मिनट अभी एक दो को देखो ऐसे हैं सब?

एक दो के सामने खड़े हो करके आपस में देखो, कम से कम दो मिनट देखो। बड़ी अच्छी सीन है। कितना अच्छा लग रहा है। कितना खुशी होती है एक दो को देखकर, किसके बच्चे हैं, कौन हैं। बड़ा अच्छा दृश्य है।

पाँचों अंगुली बराबर नहीं है, एक छोटी है एक मोटी है, कोई छोटा है कोई बड़ा, पर मिल करके एक हो गये हैं। दृढ़ता है, यह सबकी अंगुली का सहयोग है। सबके सहयोग से योगी बन गये हैं। यह है विश्वास की अंगुली, निश्चय में विश्वास है, यह विज़डम है, एक बाबा है। पाँचों ही भिन्न-भिन्न हैं पर पाँचों एक हैं क्योंकि आपस में मिल गये ना। यह इतना ऊंचा ज्ञान होते भी कैसे सहज ज्ञान है! कोई डिफीकल्ट नहीं है क्योंकि एक दो का सहयोग है ना। निश्चय में बल है। किसके हैं हम?

सारी विश्व में हरेक बी.के. की चलन और चेहरे को देख करके बताते हैं, सम्बन्ध में रहते हुए भी देह से न्यारे हैं, तो सम्बन्ध से ऑटोमेटिक न्यारे हैं। कितना सहज है, अभी सारी विश्व के हर कोने से बाबा के बच्चे बैठे हैं। कितने देशों से आये हैं, क्या कर रहे हैं? क्यों बैठे हैं? शिवबाबा के महावाक्य ब्रह्मा मुख से सुन रहे हैं और ब्रह्माभोजन खा रहे हैं। यहाँ के भोजनालय में जाओ तो पता पड़े। भोजन बनाने वाले, खाने वाले सब अच्छे हैं। अच्छा।

"सबके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखनी है तो उनकी विशेषताओं को ही देखो, कमियों को नहीं" (गुल्जार दादी जी)

जिसकी रचना इतनी सुन्दर, वो रचता कितना सुन्दर होगा! तो हम सभी को बाबा ने सुन्दर बनाया है योग्य बनाया है, सहजयोगी बनाया है, कर्मयोगी बनाया है। तो हमारे इस ब्राह्मण कुल को, रचना को देख करके रचता बाप की ही महिमा याद आती है। आप सभी भी इसी लक्ष्य से चल रहे हैं कि एक बाबा दूसरा न कोई, यह पक्का है ना! एक बाबा दूसरा न कोई, लेकिन इतना बड़ा परिवार है तो दूसरा तो है। परिवार को भी जरुर देखना ही है लेकिन बाबा कहते हैं कि फॉलो करो फादर को। फॉलो मदर फादर कहा जाता है। बाकी सिस्टर्स ब्रदर्स जो हैं, वो हैं बहुत बढ़िया लेकिन उनको फॉलो नहीं करना है। उन्हों में एक-एक विशेषता जरूर देखनी है और आजकल बाबा हमको इशारा दे रहा है कि हर एक में शुभ भावना, शुभ कामना रखो।

परिवार में सब एक जैसे तो नहीं होते हैं, थोड़ा-बहुत फ़र्क तो होता है, लेकिन उसमें भी हम शुभ भावना, शुभ कामना रखें क्योंकि बाबा की आज्ञा है। कई बार किसकी स्थिति अच्छी नहीं है, थोड़ा कुछ नीचे ऊपर कर लेता है फिर भी हम उसमें शुभ भावना कैसे रखें? क्योंकि उसकी गलती हमको दिखाई दे रही है। नियम है, मनुष्य आत्मा अच्छी चीज़ ही देखना पसन्द करती है, बुरी चीज़ देखना पसन्द नहीं करती। तो बाबा भी कहते हैं कि चाहे मेरा लास्ट बच्चा है, 16 हजार की माला का लास्ट दाना है, तो भी बाबा का उस लास्ट दाने से भी प्यार है ना। अगर बाबा का प्यार नहीं होता, तो बाबा मेरा बच्चा क्यों कहता? मेरा बनाया क्यों? बाबा की च्वाईस कोई गलत तो नहीं हो सकती! बाबा ने जब उसको मेरा बनाया तो हम भी क्या कहेंगे मेरा भाई है, मेरी बहन है। कुछ भी हो लेकिन है तो मेरी बहन, मेरा भाई। तो उसमें शुभ भावना तभी उत्पन्न हो सकती है जब हम कोई न कोई विशेषता उसकी देखें।

क्योंकि बाबा ने कहा है कि ऐसा कोई भी मेरा बच्चा नहीं है जिसमें एक भी विशेषता नहीं है, चलो 99 वे गलतियाँ हों भी लेकिन एक विशेषता उसमें जरुर है। जिस विशेषता को ही बाबा ने देखा और उसमें शुभ भावना रखी, आजकल जितने भी बड़े-बड़े वी.वी.आई.पीज़ हैं उनसे तो भाग्यवान हैं क्योंकि साधारण रूप में आये हुए बाप को पहचान तो लिया। वो नहीं पहचान सकते लेकिन लास्ट दाने ने भी कहा मेरा बाबा। पहचान करके तो बाबा शब्द बोला। उनकी तीसरी आँख इतनी तो तेज है जो भगवान को साधारण रूप में पहचान तो लिया। तो यह विशेषता कोई कम थोड़ेही है! तो बाबा कहते उनकी विशेषता देखो। चाहे कोई भाषण करने वाली है, चाहे कोई कर्मणा का काम करने वाली लेकिन हरेक की अपनी-अपनी विशेषता है और हमारी नज़र अगर उनकी विशेषता पर ही जाये, कमजोरी के ऊपर नहीं जाये तो कमजोर पर दया आयेगी, उसे सहयोग देने की भावना जाग्रत होगी। इसको सहारा देना चाहिए, ऐसे लगता है। तो आप सभी विशेष आत्मा हो, यह जानते हो? चाहे कोई नया एक सप्ताह का भी हो लेकिन निश्चय से मेरा बाबा कहा तो वो कोटों में कोई आत्मा तो हो ही गई। तो जो भी आप नये या पुराने आये हैं, कभी भी अपने आप से दिलशिकस्त नहीं होना। हम तो कुछ नहीं हैं, बड़े बड़े हैं, भल बड़े का रिगार्ड रखना आवश्यक है, बड़े को बड़ा समझना भी आवश्यक है लेकिन दिलशिकस्त नहीं होना।

बाबा आजकल दो बातों पर अटेन्शन खिंचवा रहे हैं -

एक अभिमान नहीं हो, दूसरा दिलशिकस्त नहीं हो क्योंकि मैजॉरिटी देखा जाता है कि वे या तो अभिमान के कारण पुरुषार्थ जो चाहते हैं वो प्रैक्टिकल नहीं कर पाते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं न अभिमान करो, न दिलशिकस्त हो क्योंकि हम सबने वायदा किया है कि बाबा हमारे साथ कम्बाइन्ड है। तो मेरा साथी जो कम्बाइन्ड है वो तो कमजोर नहीं है, वो तो सर्वशक्तिवान है। इसलिए दिलशिकस्त तो कभी भी नहीं हो सकते हैं। दिलशिकस्त होने का कारण ही है - बाबा को भूलना। जब माया आती है तो वो पहले बाबा को ही भुलवा देती है। इसलिए बाबा कहते बच्चे तुम कहते हो बाबा हमारे साथ कम्बाइन्ड है लेकिन रहते हो अलग। जब मेरा बाबा कहते हो तो मेरे पर अधिकार नहीं रखते हो! जैसे शरीर क्यों नहीं भूलता? योग के टाइम भी बार-बार याद आ जाता है? शरीर का भान आ जाता है, क्यों? मेरा माना ना। तो मेरे के ऊपर हमारा अधिकार होता है, लेकिन अधिकार को भूल जाते हैं और कहते कि बाबा आपने कहा है ना, मदद करूँगा तो अभी करो ना। बाबा आपने वायदा किया है ना... जैसे रॉयल भिखारी बनके बाप से मांग रहे हैं। अरे! बच्चे कभी बाप को कहेंगे क्या कि मेरे को देंगे ना, यह करेंगे ना। वो तो कहेगा मेरा तो हक है, अधिकार है। जिस टाइम पर मदद की आवश्यकता है, उस टाइम बाबा मदद नहीं देवे, यह असम्भव है।

70 साल में कितनी कुछ बातें हुई होंगी, बातें आना अच्छा है, अनुभवी बनाती हैं। लेकिन टाइम पर बाबा की मदद लेने से असम्भव बात भी सम्भव हो जाती है। मदद देने के लिए बाबा बंधा हुआ है। बाबा कभी भी मदद न देवे, यह हो ही नहीं सकता, स्वप्न तक नहीं हो सकता और बाबा कहता क्या है? बच्चे, मैं तेरे लिए ही आया हूँ, तो हमको यह नशा होना चाहिए कि मेरा बाबा है, मेरे लिए बाबा आया है। इतना नशा और निश्चय होना चाहिए और हमेशा हमारी नज़र विशेषता के ऊपर होनी चाहिए। बाबा ने इसको अपना बनाया है तो कुछ तो होगा ना। चलो, आपको उसकी विशेषता नहीं नज़र आती है, लेकिन बाबा ने विशेषता देखी तब उसने बनाया है, यह तो समझ सकते हो ना। भगवान का बच्चा है, चाहे लास्ट नम्बर है। भगवान का बच्चा क्या नहीं होगा? चलो, बिचारा परवश है, कुछ पिछले जन्मों का हिसाब कड़ा होता है जो बिचारा चुक्तू कर रहा है, तो उसके ऊपर और ही सहयोग दो ना क्योंकि मेरा भी तो भाई है ना, बहन है ना!

शुभ भावना और शुभ कामना यह शब्द बाबा बार बार बोलते हैं। तो यह शुभ भावना, शुभ कामना हमारी एक नेचुरल लाइफ हो जानी चाहिए। और जितना हम अपनी लाइफ को नेचुरल विशेषता देखने की बनायेंगे, उतनी हमारे को भी माया कम आयेगी। क्योंकि जब किसी के प्रति घृणा दृष्टि होती है तब वेस्ट थॉट्स चलते हैं और बाबा ने हमारी वर्तमान समय की कमजोरी यही सुनाई है कि आजकल बच्चों के पास मैजारिटी माया व्यर्थ संकल्प के रूप में ही आती है और व्यर्थ संकल्प इतनी तेज रफ्तार से चलते हैं जो दिमाग ही कमजोर हो जाता हैं, एनर्जी वेस्ट जाती है, समय वेस्ट जाता है। संकल्प जो हमारा बड़ा खजाना है, वो खजाना कितना वेस्ट होता है। इसीलिए बाबा कहते हैं कि देखेंगे ही नहीं तो संकल्प चलेगा ही क्या, विशेषता देखेंगे तो संकल्प भी शुभ ही संकल्प चलेंगे ना। और किसी भी कमजोर को शुभ भावना, शुभ कामना का सहयोग दो तो आपका पुण्य जमा होगा।

कोई बहुत बीमार हो और आप उसको सहारा दे दो तो उसके मुख से क्या निकलता है? दुआयें ही निकलती है ना। कोई गिरे हुए को उठा लो तो उसके मुख से क्या निकलता है? आपको तो मैं जीवन भर नहीं भुलूँगा, तो यह दुआ हुई ना। बाबा ने बहुत अच्छी बात सुनाई है कि बच्चे यहाँ धर्म और राज्य दोनों स्थापन हो रहे हैं। कोई भी धर्म में धर्म के साथ राज्य स्थापन नहीं हुआ है। हमारे बाबा के ज्ञान में ही धर्म और राज्य दोनों स्थापन हो रहे हैं। जब राज्य स्थापन हो रहा है तो अगर सभी राजा बन जायेंगे तो राज्य किस पर करेंगे? इसलिए नम्बरवार तो होंगे ही। हमारी 108 की विजयमाला भी देखो यादगार है, उसमें एक नम्बर का दाना और 108 वाँ दाना, क्यों बना 108 वाँ? जब एक ही सिखाने वाला बाबा है और हम एक ही बाबा के बच्चे हैं लेकिन वो एक नम्बर बना वो 108 वाँ नम्बर क्यों बना? यह ऐसे कैसे बनें? तो जरूर उसमें कुछ कमी रही है, तब तो 108 वाँ नम्बर बना ना। तो नम्बरवार हैं इसलिए इसमें सब प्रकार के होंगे ही, इसलिए हम क्यों, क्या, नहीं करते रहें क्योंकि यह क्यों क्या शब्द हमको गिराता है।

तो अब अपनी कन्ट्रोलिंग पॉवर रखो, रूलिंग पॉवर रखो। और वो पॉवर तो बाबा की याद से मिलनी है। और मेरा बाबा कहा तो याद भी कोई मुश्किल नहीं होनी चाहिए। एक दिन आप चेक करके देखो सारा दिन क्या याद रहता है? मेरा काम, मेरा सम्बन्ध, मेरा शरीर, मेरा मेरा ही याद रहता है, चलो मेरा बाबा भी कहो तो भी मेरा ही याद आया ना और तो कुछ याद नहीं आता। तो मेरा मेरा कहने वाला मैं राजा हूँ, यह नहीं भूलना चाहिए। दूसरा बाबा कहता है - अभी समाप्ति का समय समीप आ रहा है। फरिश्ता बनकर फिर देवता बनना है तो यह भी चेक करो कि हम फरिश्ते बने हैं? एक यह चेक करो कि हम राजा बने हैं? दूसरा यह चेक करो कि फरिश्ता बने हैं? क्योंकि ब्राह्मण सो फरिश्ता, फरिश्ता सो देवता। और फरिश्ता बनना बहुत सहज है। सिर्फ अपना बोझ अपने ऊपर न रख करके बाबा को दे दो, बस। यह वेस्ट थॉट्स, वेस्ट बोल यही बोझ है, तो बाबा कहते यह बोझ क्यों उठाते हो? वेस्ट को बेस्ट में क्यों बदलने नहीं देते हो?

इसीलिए बाबा हमेशा कहता है सवेरे का क्लास करना

सबसे अच्छा है। सवेरे-सवेरे मन को ज्ञान के मनन का भोजन खिलाना चाहिए। मन का भोजन है यह मुरली। नहीं तो खाली मन शैतान का घर कहा जाता है। तो मन को मनन से भर लो तो वेस्ट बेस्ट में बदलता जायेगा। मुरली सुनना माना उसमें जो बाबा ने कहा वो करना है, सिर्फ पढ़ना नहीं है, उससे फायदा उठाना है। मन को शुद्ध भोजन दिया तो मन ताकत वाला बन जाना चाहिए। मुरली से इतना प्यार हो तब बाबा कहेगा मेरे से भी प्यार है क्योंकि बाबा का प्यार मुरली से है और आपका प्यार बाबा से है तो बाबा का जिससे प्यार है उससे आपका भी होना चाहिए। तो इतना बाबा से प्यार, बाबा के महावाक्यों से प्यार हो जिसको बाबा शार्ट शब्द कहते हैं - श्रीमत।

अमृतवेले से लेकर बाबा ने हर कर्म की श्रीमत दे दी है। सहजयोगी बनना हो तो हर कर्म श्रीमत प्रमाण करते चलो, बस। आँख से क्या देखो, मुख से क्या बोलो, बाबा ने सब डायरेक्शन दिया है, बस जो बाबा ने दिया है वो सिर्फ चेक करो, अच्छा, मैं बोल रही हूँ, जो बाबा के बोल हैं वही बोल रही हूँ? जो देखने के लिए बाबा का डायरेक्शन है, वही देख रही हूँ या शरीर को ही देख रही हूँ? यानि हर कर्म के लिए बाबा ने जो डायरेक्शन दिया है, जो कहा है वही मैं कर रही हूँ? फिर तो बस, बेफिकर, मंजिल पर पहुँच ही जायेंगे। ब्रह्मा बाबा का हमारे सामने एक्जाम्पल है कि ब्रह्मा बाबा श्रीमत पर चला तो मंजिल पर पहुँच गया ना, अव्यक्त हो गया ना। तो हम भी मंजिल पर पहुँच ही जायेंगे, लेकिन अगर मनमत, परमत मिक्स करेंगे तो धोखा खायेंगे। श्रीमत माना श्रीमत। न मनमत न परमत। फिर हमारी मंजिल दूर नहीं क्योंकि हमको भी तो देवता बनना ही है, तो वो सामने दिखाई देना चाहिए, यानि अनुभव होना चाहिए। आज मैं ब्राह्मण हूँ, कल फरिश्ता सो देवता बनूँगा। तो ऐसी जब हमारी अवस्था रहेगी तब हम मंजिल पर जरुर पहुँचेंगे। तो अभी चलते फिरते सोचो कि मैं राजा हूँ? मैं फरिश्ता हूँ? इससे बेफिकर बादशाह बन जायेंगे। बाबा कहता है बेगमपुर के बादशाह, बेफिक्र बादशाह बनो।

मधुबन में आये हो तो एक एक सेकेण्ड, एक एक संकल्प भी सफल करो क्योंकि यह दोनों अमूल्य हैं और वो भी व्यर्थ गँवायें तो बहुत नुकसान होगा इसलिए इसे अच्छी तरह से सफल करो। तो यहाँ सफलता के संस्कार बनाके जाओ तो वहाँ आपको बहुत काम आयेगा। इसके लिए बस, बाबा और मैं, मैं और बाबा... । अच्छा, ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

बाबा को संसार बनाने से सर्व समस्याओं का सहज समाधान

प्यारा बाबा कहता कि आप सब मीठे बच्चे गृहस्थी नहीं ट्रस्टी हो। अगर इनसे भी परे देखो तो ट्रस्टी भी नहीं, हम तो सब छोटे बच्चे हैं। बच्चे को गृहस्थी नहीं कहेंगे। हम बच्चे हैं बस। हमारा संसार एक बाबा है। माँ भी वही है, पिता भी वही है, बंधू, सखा, बेटा, देवों का देव सब कुछ वही है। इसलिए हमारा सारा संसार एक में है। एक हमारा संसार है। एक में ही हमारा संसार है। जब हमारा एक ही संसार है, एक में सारा संसार है तो हम संसारी नहीं हैं, माना हम दुनियावी नहीं हैं। दुनिया की रीति रसम से परे हैं। दुनिया की रीति रसम अपनी है, उनका बहुत बड़ा संसार है। हमारा संसार तो एक बिन्दु है। हम उस संसार से अलग हैं। हमारा संसार बाबा और बाबा का परिवार है। हमारी प्रीत भी नई है, रीत भी नई है क्योंकि हमारा मीत भी नया है। जिसका हम सदैव गीत गाते हैं।

हम संसारी नहीं माना गृहस्थी नहीं। गृहस्थी माना बहू बेटे, धोता, पोता...कितनी बड़ी दुनिया होती। हमारा तो एक बाप, एक माँ है, हम सब बच्चे हैं। इसलिए एक मात-पिता के हम सब बच्चे हैं हमारे को कोई सासू, ससुर, देवर, जेठ नहीं, एक से सारे रिश्ते हैं, सब रिश्ते बाबा ने तोड़ डाले। बाकी निमित्त कर्मबन्धन के रिश्ते हैं। बाबा की पहली-पहली श्रीमत व डायरेक्शन है - देह सहित देह के सब सम्बन्धों को भूल मामेकम् याद करो। उसी अनुसार हम अकेली आत्मा हो गई। इस देह का भी बहुत बड़ा अपना संसार है - इसको सम्भालना पड़ता, खिलाना-पिलाना पड़ता...परन्तु बाबा कहते इससे भी निवृत्त बनो। इसे भी भूलो। यही हमारी पढ़ाई है। इस देह के भान को भी मिटाना है। खुद का यह जो शरीर है, यह प्रवृत्ति भी हमें जो नीचे खींचती है, देह में ले आती है, हमें तो इसे भी परिवर्तन कर देही बनना है। यही हमारी पढ़ाई व रात दिन का अभ्यास हो। अशरीरी बनने का मनन-चिन्तन निरन्तर और नित्य करना ही राजयोग है।

राजयोग अर्थात् इस शरीर से परे अपने स्व स्मृति में रहना। एक मैं आत्मा और एक हमारा परमात्मा, इसी स्थिति में रहकर डेड साइलेन्स का अनुभव करना है। इसके लिए एकान्त की दरकार है। एकान्त में बैठ जितना-जितना हम आवाज से परे संकल्प विकल्पों से परे, निराकारी स्थिति में रहें – यही आदि और अन्त मनमनाभव है। छोटे से बड़े सबको इस कर्मातीत

स्टेज पर आने का पूरा-पूरा पुरुषार्थ करना है। यही मेहनत करनी है। इस पढ़ाई को जितना-जितना हम रात को सोते, सवेरे उठते दिन भर स्मृति में रखें तो जीवन की सर्व समस्यायें समाप्त हो जाएं। इसलिए बाबा ने हमें स्मृति में आने के अनेक साधन दिये हैं। हमारी दिनचर्या स्टार्ट ही ऐसे होती। आंख खुली मैं आत्मा इस शरीर रूपी रथ पर विराजमान हो, पहली गुडमार्निंग है बाबा। और अपने को आत्मा जान उसी बाबा से मीठी-मीठी रूह-रुहान करते अथवा इस शरीर, इस संसार से परे निकलकर अपने घर में बैठ जाते। पहले रमण करते अपने घर में फिर पहुँच जाते खेल करने। खेल करते भी बाबा ने ट्रैफिक कन्ट्रोल की जो प्रेरणायें दी हैं, उसमें भी संकल्पों को कन्ट्रोल करना है। एक सेकण्ड में नीचे आना, एक सेकण्ड में आवाज से परे जाना। मुरलीधर की मुरली भी रोज़ सुननी है। उस समय भी यही अभ्यास हो कि मैं आत्मा कानों का आधार लेकर परमात्मा के महावाक्य सुन रही हूँ। बाबा मुख का आधार ले हमें सुना रहे हैं। ऐसे अभ्यास करते-करते जितना निराकारी स्थिति में रहेंगे उतना निर्विकारी स्वत: बन जायेंगे। निर्विकारी स्थिति बनाने का साधन है अपने को निराकारी बिन्दु आत्मा स्थिति में स्थित करना। जितना-जितना निराकारी रहेंगे तो निरहंकारी भी बनते जायेंगे। यह तीनों महावाक्य हम सबके प्रति मंत्र के रूप में बाबा के अन्तिम महावाक्य हैं। इसे अपना मंत्र समझकर रखेंगे तो अन्दर में जो अनेक प्रश्न उठते कि निराकारी स्थिति कैसे बने, वह सब रोज़ के अभ्यास से समाप्त हो जायेंगे।

बाबा कहते बच्चे तुम योद्धा हो, तूफान तो आयेंगे, ऐसा कहकर बच्चों की दिल ले लेते, जिससे बच्चों का चढ़ने के पहले ही श्वांस न फूल जाए। यह युक्ति है। लेकिन दूसरी तरफ बाबा कहते हैं बच्चे तुम सर्वोत्तम ब्राहमण कुल भूषण हो, ब्रह्माकुमार कुमारी हो। तुम्हारी पढ़ाई है हम आत्मा हैं, संसार एक बाबा है, लक्ष्य है देवता बनने का फिर यह प्रश्न पूछते हो कि माया आती है? माया के आने का गेट तभी खुलता है जब अपने को पहले तो देह समझते, फिर आता यह मेरी गृहस्थी है, यह समाज है। हम तो पुरानी दुनिया में रहने वाले, व्यवहार करने वाले हैं। परन्तु जब एक सेकण्ड में निकल जाते तो न मेरा संसार है, न मेरी गृहस्थी है, गृहस्थी बाबा की है, हमारी नहीं। हम तो छोटे बच्चे स्टूडेन्ट हैं। जब बुद्धि में यह निर्णय कर लेते तो माया के कई प्रकार के चक्र समाप्त हो जायेंगे।

कई कहते हैं बाबा ने तो कहा है ना - तुम्हें प्रवृत्ति निभानी है। परन्तु बाबा ने ऐसा तो नहीं कहा तुम गृहस्थी हो। कई यह भी समझते हैं कि हम गृहस्थी नहीं, ट्रस्टी हैं। ट्रस्टी समझकर चलते फिर भी कभी-कभी अमानत में ख्यानत आ जाती। अब इससे भी हमें परे जाना है। न मेरा संसार है, न मैं संसारी हूँ। मैं बाबा का, ये संसार बाबा का, यह इतने मीठे बोल हैं जिससे सब समस्यायें खत्म हो जाती हैं। मूँझने की सब बातें समाप्त हो जाती हैं। ऐसे भी नहीं प्रवृत्ति तो है, लेकिन पवित्र प्रवृत्ति है? प्रवृत्ति समझना माना ही माया के आने का गेट खोलना। आप समझेंगे हम प्रवृत्ति वाले हैं तो माया जरूर आयेगी। कभी देह की आकर्षण में लायेगी, कभी तेरे मेरे में लायेगी... फिर उसको जीतने में समय जायेगा। यह जो समझते हम तो योद्धे हैं, हाँ हार नहीं खानी है, तूफान तो आते हैं। कभी हार जाते, कभी जीत लेते, अब इसी खेल में समय नहीं गँवाना है। अगर इसी खेल में रहे तो संकल्पों, विकल्पों की दुनिया में नाचना पड़ेगा। उतरने चढ़ने में ही समय चला जायेगा। परन्तु जब निश्चय हो जाता हम बाबा के, बाबा हमारा तो न मैं गृहस्थी हूँ, न मेरी प्रवृत्ति है। इतना बड़ा यह संसार है, कितनों पर मैं आकर्षित हूँ? मुझे तो आकर्षण करने वाला एक मेरा बाबा है। तुम किसको भी न देखो, एक को देखो। मेरा कोई नहीं। प्रवृत्ति में रहना पड़ता यह तो खेल है। जितना-जितना याद में रहेंगे उतना कर्म का खाता चुक्तू होगा। हमें इन खातों को मिटाना है। याद में रहना है। ऐसे नहीं एक घड़ी मिटाओ, एक घड़ी में फिर बनाओ। ऐसे करते रहेंगे तो कर्मातीत कब बनेंगे! जब कहते क्या करें माया आती है, उसे जीतना पड़ता, तो बार-बार माया आयेगी, पिछाड़ेगी फिर कभी हार, कभी जीत होगी। परन्तु सदैव रहे मैं आत्मा निराकार हूँ, मेरा बाबा भी निराकार है। यह अभ्यास करना ही मेरी पढ़ाई है। हम भाई बहन हैं इससे भी बुद्धि नीचे आती, इसलिए सदैव देखो यह जगत माता है, सब जगत पितायें हैं। इससे मेरी स्त्री, मेरा पति यह भान खत्म हो जायेगा।

हमें बाबा ने ड्युटी दी है - तुम हो विश्व कल्याणकारी। मैं कोई एक आत्मा की सेवा के निमित्त नहीं। विश्व में सब आ जाते। जब विश्व कल्याण की सेवा पर स्वयं को देखते हो तो कल्याण की सेवा वाले ऐसे नहीं कहेंगे अभी तक मेरे संस्कार परिवर्तन नहीं होते। अगर मेरे ही संस्कार परिवर्तन नहीं तो मैं दूसरों का कैसे करूंगी। हम सब गॉडली सर्विस पर हैं। हमारी जिन्दगी ओनली बाबा की सेवा के निमित्त है। हमें तो अब वापिस स्वीट साइलेंस होम में जाना है। हम यहाँ खाने-पीने के लिए नहीं जिन्दा हैं, यह अन्तिम समय है ही विश्व कल्याण की सेवा के लिए। इसलिए अपना समय, संकल्प और सम्पति तीनों खुद के लिए नहीं हैं परन्तु खुदा के लिए हैं। जो खुद के लिए खाता वह भी चोर बनता। खुद के लिए खायेंगे तो आसक्ति जायेगी। हम खुदा की सेवा के लिए इस घोड़े को घास देते हैं। जब बुद्धि में रहता - संसार हमारा बाबा है, जो भी है सब बाबा के लिए है तो बुद्धि की लाइन क्लीयर हो जाती है। अच्छा!